# इक्कीसवी सदीं और महिला शिक्षा

रेखा शर्मा[1], डॉ. सविता शर्मा[2]
[1]षोधार्थी, आईसेक्ट विष्वविद्यालय, रायसेन (मध्य प्रदेष) भारत
[2]एसोसिएट प्रोफ़ेसर, आईसेक्ट विष्वविद्यालय, रायसेन (मध्य प्रदेष) भारत

**सांराश**

*षिक्षा रोषनी का जरिया है बिना षिक्षा के व्यक्ति अंधा होता है ऐसी स्थिति में उसके आस–पास के क्षेत्र में जो सीमित जानकारियॉ होती है, व्यक्ति वहीं घूमता रहता है इसके आगे कुछ और है क्या इसकी जानकारी भी उसे नहीं होती अषिक्षित और षिक्षित का यही मूलभूत अन्तर है 'यथा स्थिति'' असंन्तोष जनक है, अपर्याप्त है, यह विचार तभी उठेगा जब नारी की ऑखे संसार की स्थिति समझें और उसमें नारी को अपनी बढ़ी चढ़ी भूमिका समझने का अवसर मिले यह कार्य षिक्षा के अलावा कोई दूसरा नहीं कर सकता षिक्षा हर दृष्टि से आवष्यक है व्यक्ति का निजी जीवन किसी भी प्रकार का क्यों न हो षिक्षा के बिना उसमे श्रेष्ठता स्थापित नहीं की जा सकती क्योंकि विचारो की श्रेष्ठता व उत्कृष्टता का मापदण्ड तो षिक्षा ही है षिक्षा के बिना चिंतन के स्त्रोत ही नहीं खुलते व्यक्ति कितना ही प्रतिभा षाली क्यों न हो अपने चिंतन और विवेचन को विस्तृत नहीं कर सकता। प्रस्तुत अध्ययन में इक्कीसवीं सदीं में महिलाओं की समाजिक स्थिति और उनकी षिक्षा के विकास में जो बाधायें आती है उनका अध्ययन किया गया है।*

***मुख्य बिन्दुः***– षिक्षा, महिला षिक्षा, सामाजिक स्थिति आदि।

## I भूमिका

संसार में जो भी भावी सदस्य है इसका प्रादुर्भाव स्थान नारी है जिसकी गोद में पलकर ही वह संसार में खड़ा हो सकता है यहॉ तक की माता के स्तन का अमृत पान पीकर पुष्ट होना उसकी हंसी से हॅसना और उसकी वाणी से बोलना भी सीखता है उसकी कृपा से ही जीकर उसके अच्छे–बुरे संस्कार से बालक अपने भावी जीवन का निर्माण करता है, अर्थात जैसी मॉ होगी– संतान अधिकाषतः उसी प्रकार की होगी । भारत का अतीत इस बात को स्पष्ट प्रकट करता है कि इतिहास के गौरवषाली वर्षो में नारी का महत्वपूर्ण योगदान है उस समय संतान की अच्छाई बुराई का संबध मॉ की मर्यादा के साथ जुड़ा था । वह अपनी मान मर्यादा की प्रतिष्ठा के लिए संतान को बड़े ही उत्तारदायित्व पूर्ण तरीको से पालती थी। देष काल और समाज की आवष्यकता के अनुरूप संतान देना अपना परम–पावन कर्त्तव्य समझती थी। यही कारण था कि जब जब युगानुसार संत,महात्मा ,त्यागी,योद्धा वीर और बलिदानियों की आवष्यकता वड़ी उसने अपनी गोद में लालन पालन दिये।

किंतु वह अपने इन दायित्वों को ईमानदारी से तभी निभा सकी जब उसे स्वंय के विकास का अवसर प्रदान किया गया। जिस स्त्री का स्वंय का विकास न हो सका हो वह भला विकासषील संतान कैसे दे सकती है ? जिसको देषकाल की आवष्यकता और समाज की स्थिति और संसार की गतिविधि का ज्ञान ही न हो वह उसके अनुसार अपनी संतान को किस प्रकार बना सकती है ? अपने इस दायित्व को ठीक प्रकार से निभा सकने के लिए आवष्यक है कि नारी को सारे षैक्षणिक एवं सामाजिक अधिकार समुचित रूप से दिए जाऍ । प्राचीनकाल में नारी को यह अधिकार मिले हुए थे। उनके लिए 'षिक्षा' की समुचित व्यवस्था थी समाज में आने जाने एवं उसकी गतिविधियों में भाग लेने की पूरी स्वतंत्रता थी। वे पुरूषों के साथ वेद पढ़ती–पढ़ाती थीं यज्ञ भी होता ऋषित्व के साथ यजमान के रूप में बैठती थी और धर्म–कर्मो में हाथ बटाती हुई तत्व दर्षन किया करती थी। यही कारण था कि वे गुण ,कर्म, स्वभाव में पुरूषों के समान ही उन्नत हुआ करती थी और तभी समाज एवं समकक्ष स्त्री–पुरूष की सम्मलित संतान भी उन्हीं की तरह गुणवती होती थी। जब तक समाज में इस प्रकार की मंगल परंपरा चलती रही। भारत का वह समय देवयुग की तरह सुख–षांति और संपन्नतापूर्ण बना रहा किंतु ज्यों ही इस पुण्य परपंरा में अवरोध पैदा हुआ स्त्री को उसके समुचित एवं आवष्यक अधिकारो से वंचित किया गया।

अपने राष्ट् का मंगल समाज का कल्याण और अपना वैयक्तिक अहित ध्यान में रखते हुए नारी को अज्ञान के अंधकार से निकालकर प्रकाष में लाना होगा। चेतना देने के लिए उसे षिक्षित करना होगा।

## II महिलाओं की सामाजिक स्थिति

समाज और साहित्य ने हमेषा से ही महिलाओं की अपेक्षा की उसे दूसरे दर्जे का स्थान दिया गया है। नारी की सामाजिक और आर्थिक स्थिति षोषित और असहाय से अधिक देखी नहीं गई । नारी को हमेषा ही हर क्षेत्र में कमतर आंका गया है। नारी का यह दुर्भाग्य ही कहें कि वर्तमान षिक्षा प्रणाली में नारी को विविध सहुलियतें एवं राहतें देने के प्रयास उजागर हो रहे है, किन्तु फिर भी षिक्षा व्यवस्था में नारी ने प्रगति की है ऐसा हम नहीं कह सकते हैं क्योंकि नारी का जीवन प्राचीन काल से ही अभिषप्त ही माना गया है जिसकी त्रासदी अमृता प्रीतम की जबानी :–

''हसरत के धागे जोड़कर हम ओढ़नी बनते रहें
बिरहा की हिचकी में भी हम षहनाई को सुनते रहें।''

हमारे मत से नारी जीवन का सफर है। षिक्षा के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द ने कभी कहा था– 'Education is the manifestation of divnity present in the man' मनुस्मृति भले ही यह कहती है 'यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः' लेकिन इसकी ओर ध्यान न देते हुए

' न स्त्री स्वातंत्रयमर्हति' इस तत्व को सीने से लगाकर हमारा जीवन चल रहा है। स्त्री षिक्षा की खातिर अनेक आयोगों का गठन हुआ,षोध निबंध लिखे गये लेकिन जिस सामाजिक परिवर्तन की अपेक्षा थी , वह अब तक नहीं हुआ बल्कि सामाजिक परिवेष और भी विकृत होता हुआ दिखाई देता है। विरासत से चली आई सामाजिक रचना,धार्मिक बंधन, अनुपलब्ध रोजगार, सांस्कृतिक रूढ़ियों और रिवाजों के साथ स्त्री की ओर देखने का नजरिया ऐसे कई कारण इस संदर्भ में उभरते है। नारी की इस दुर्दषा में विज्ञापनी संस्कृति और सोषल मीडिया के साथ टी0वी0 चैनल्स भी अपना योगदान दे रहे है। षहर एवं महानगरों में यह हालात कमोबेष बदले हैं, किन्तु ग्रामीण परिवेष में आज भी नारी की ओर देखने का दृष्टिकोण विकृत एवं तुच्छता से परिपूर्ण ही है ऐसा हम मानते है। हिन्दुस्तान की आबादी का आधा हिस्सा बगैर षिक्षा के अर्थात् षिक्षा के अभाव के कारण समाज अधूरा एवं दुबला ही रह गया है यह वर्तमान की सच्चाई है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दुस्तान में स्त्री–षिक्षा के प्रचार एवं प्रसार पर अधिक बल दिया गया फिर भी हिन्दुस्तान की विषाल जनसंख्या के सामने यह प्रयास नगण्य ही है।

**(क) बाल विवाह की कुप्रथा**–षहरों की अपेक्षा देहातों में आज भी बाल विवाह हो जाते है। इसके कारण लड़कियों की षिक्षा में बाधाएँ आती हैं और बचपन में ही उनकी षिक्षा समाप्त हो जाती है। इसके पीछे यह घटिया सोच है जिससे बाल विवाह बड़े पैमाने पर हो जाते है–

''अष्ट वर्षात् भवेत् कन्या, नव वर्षात् तू रोहिणी,
दष वर्षात् भवेत् गौरी, अतः उर्ध्व रजस्वला।''

**(ख) नारी का घटता हुआ अनुपात** – समाज में पुत्र की चाहत एवं आकांक्षा अधिक होती है। परिवार में स्त्री की अपेक्षा पुरूषों को अधिक तरजीह दी जाती है और इसी कारण वह लिंग परीक्षण करते हुए भ्रूर्ण हत्या कर दी जाती है। घटता हुआ लिंगानुपात बलात्कार जैसी घटनाओं को बढ़ावा देता है। सन् 1911 में 1000 पुरूषों पर लिंगानुपात 964 थी जो सन् 2011 में घटकर 940 तक आ पहुँचा है। नारी के संदर्भ में बढ़ने वाले गुनाह इसी बात की तसदीक ही करते हैं कि आज इतने अपराध क्यों बढ़ रहे हैं। राष्ट्रीय अपराध सर्वेक्षण ब्यूरो 2012 के अनुसार महिला अपराधों की स्थिति निम्नानुसार है।

## III स्त्री–शिक्षा के विकास में बाधाएँ

| कुल महिला जनसंख्या | बलात्कार | अपहरण | दहेज हत्याएँ | घरेलू हिंसा का षिकार | गलत नियत हमला |
|---|---|---|---|---|---|
| 5851.89 लाख | 249223 | 38262 | 8233 | 106527 | 45351 |

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 2012 के दौरान महिला अपराधों की दर 41.74 प्रतिषत रही है जो देष में महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों की पोल खोलती है।

**(ग) व्यापक निरक्षरता** – आज भी हिन्दुस्तान की लगभग आधी आबादी निरक्षर है। केवल 52 प्रतिषत लोगों के साक्षर होने का दंभ भरकर हम कभी भी सुपर पॉवर नहीं बन सकते इस तथ्य की ओर आज कोई भी ध्यान नहीं देता। नारी को इसलिए षिक्षा के मुख्य प्रवाह में नहीं लाया जाता क्योंकि उसके अभिभावक ही खुद निरक्षर है और इस कारण वे षिक्षा का महत्व नहीं समझते । नारी को षिक्षा देना यह उनकी अवधारणा के अनुसार धन एवं समय दोनों का अपव्यय है और इस अवधारणा से उन्हें बाहर निकालना इतना आसान नहीं है लिहाजा नारी षिक्षा पर इसका भी विपरीत असर होता है। सरकार के पास धन का अभाव होने के कारण सरकार भी नारी षिक्षा के संदर्भ में अब उदासीन ही नजर आती है। 2011 के ऑकड़ों के अनुसार केवल 65. 46 प्रतिषत महिलाएँ ही साक्षर हो सकी है और पुरूषों की तुलना में यह ऑकड़े कमजोर है।

**(घ) नारी विषयक सामाजिक दृष्टिकोण** – भारतीय संस्कृति नारीणां समुन्नतम् स्थान सर्वस्वी किते ऐसा कहा जाता है। लोमकस्सप जातक में कहा गया है–

'' बल चन्दो, बल सुरियों बल समण ब्राहम्ण
बल बेला समुदस्य बलालिबल इत्थियों।''

हमारी संस्कृति तथा धर्म ग्रंथ नारी को या देवी मानते है या रीन हीन। वह भी मानव है यह मानने के लिए कोई भी तैयार नहीं है। संस्कृत में स्त्री को 'पराषक्ति' कहा जाता है। एक पुरूष जब जब पढ़ता है तो वह अकेला साक्षर होता है किन्तु एक लड़की जब पढ़ती है तो वह सारे परिवार को साक्षर बनाती है लेकिन इसकी ओर ध्यान कौन देता है ? स्त्री को निरक्षर रखने का अर्थ है उसे अज्ञानी बनाना ही नहीं बल्कि उसकी उपस्थिति को भी नकारना है। स्त्री का मात्र अपना घर–द्वार और बाल–बच्चे ही संभालने हैं इस मानसिकता से हमारा समाज अभी तक आजाद नहीं हुआ है। आज भी सौ प्रतिषत औरतों की आबादी में केवल 8 प्रतिषत नारी उच्च षिक्षा ग्रहण कर पाती है। यह प्रष्न भी हमें सोचने के लिए मजबूर करता है।

आज भी अभिभावक अपनी लड़कियों को किसी कन्या विद्यालय में ही पढाना चाहते है जिसके फलस्वरूप प्रगति बाधित होती है। आज भी नारी के लिए एक अच्छा 'पति' पापा अथवा एक अच्छी 'पत्नी' बनने हेतु षिक्षा का प्रबंध किया जाता है जो वास्तव में अनुचित

उद्देष्य और इसी कारण उच्च षिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में नारी का अनुपात बहुत कम दिखाई देता है।

इक्वीसवीं सदी आज वैष्वीकता का नारा लेकर आई हे और हम सब के दरवाजों पर दस्तकें दे रही है। सवाल यह है कि महिलाएं उसमें कहां है। कम्प्यूटर साक्षरता के संदर्भ में आज नारी कहॉं और किस स्थिति में है ? महिलाऐं दुनिया की ओर पीठ करते हुए नहीं बैठ सकती है जिस दिन महिलाओं में कम्प्यूटर साक्षरता बढ़ेगी नारी उच्च षिक्षा क्षेत्र में और भी प्रगति करेगी यह हमारी विनम्र अवधारणा है। इस प्रकार सामाजिक, साहित्यिक, सरकारी सभी स्तरों पर समग्र प्रयास से न केवल महिलाऐं अधिक षिक्षित व सबल होगी अपितु देष के विकास में अधिक सहयोगी हो सकेंगी।

दुनिया सिमट रही है, एक वैष्विक देहात में तब्दील हो रही है और ऐसे वातावरण में खुद नारी को भी अपनी अवधारणा बदलनी होगी। दुनिया नजदीक आई लेकिन लोग दूर–दूर जाने लगे है। इसलिए सर्वप्रथम जब अभिभावक की अपनी मानसिकता बदलेगी सामाजिक परिवर्तन अपने आप हो जाएगा। सम्पूर्ण विष्व एक देहात है ऐसा हम मानते है तो इस विषाल देष की आधी आबादी को आगे आकर अपने उत्तरदायित्व को उठाना होगा अन्यथा यह समाज भी पिछड़ा समाज बनकर रहेगा। जब तक उच्च षिक्षा क्षेत्र में नारी अपना सहभाग निष्चित नहीं करेगी तब तक उसकी कीमत पुरूषों की मानसिकता से प्रेरित रहेगी। समाज में उसका दर्जा भी पुरूष ही तय करेंगे।

## V मूल्यांकन

स्त्री षिक्षा को उत्साह वर्धक प्राथमिकता मिलनी चाहिए। हर दृष्टि से स्त्री षिक्षा के लिए आवष्यक वातावरण उत्पन्न करना और उसके साधन जुटाना आज की स्थिति में नितांत आवष्यक है। इसकी पूर्ति के लिए पुरूष वर्ग को सहायता करनी चाहिए, परंतु नारी को इस दिषा में विषेष रूचि दिखाना चाहिए अन्यथा स्थितियों को बेहतर करने में कठिनाई होगी। स्त्री पर ही समस्त मानव जाति का कल्याण केन्द्रित और आधारित है। अतः महिलाओं को अपनी अपनी शक्ति, योग्यता एवं बुद्धि को समग्र रूप से षिक्षित उच्च षिक्षित होने में लगाना होगा, उसके इस कार्य में समाज का दृष्टिकोण सहयोगात्मक होना सकारात्मक को बढ़ावा देगा। सरकारी स्तर पर भी प्रयास आवष्यक है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] **शर्मा, पं. श्रीराम (2012)** षिक्षा एवं विद्या, संषोधित संस्करण।

[2] **शर्मा, पं. श्रीराम (1998)** इक्कीसवीं सदी–नारी सदी, द्वितीय संस्करण।

[3] विष्भरा मासिक पत्रिका माह अप्रैल 2016।

[4] स्वरचित।